International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्यावरणीय अभिवृत्ति उत्पन्न करने में पर्यावरण शिक्षा की भूमिका

रवीश कुमार
शोध छात्र
श्री वेकटेश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला (उ0प्र0)

डा0 सुरेश सिंह
एम0एस0सी0, एम0एड0, पी0एच–डी0
असिस्टेंट प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग
डवइपसम रू 9927570236

डवइपसम रू 9897901463
मउंपस रू तंअममीानउंत56 ⁄ हउंपसण्बवउ

पर्यावरण तथा प्रकृति दोनों एक दूसरे के समानार्थी हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत वायु, जल, भूमि, वनस्पति,पेड़–पौधे, पशु–पक्षी एवं मानव आदि सम्मिलित किए गये हैं, परन्तु जब से मानव ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अर्जित की,सुख–सुविधाके साधन जुटाये, बढ़ती आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु औद्योगिक क्रान्ति का सहारा लिया, तभी से प्रकृति का सामान्य रूप विखण्डित होने लगा। वन कटने लगे, उपजाऊ भूमि पर आवास बनने लगे बड़े–बड़े जंगल साफ कर बाँधों की योजना बनी और न जाने कितने ऐसे प्रयोग शुरू हो गये जो मानव प्रकृति के प्रतिकूल थे अतः सामान्य जीवन में परिवर्तन आने लगा। पहले तो प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता में कमी आई और फिर शनै–शैन वायु, जल भूमि आदि भी प्रदूषित होने लगे तथा ये समस्याऐं चिन्ता का विषय बन गयी परन्तु इन समस्याओं का समाधान अकेले न तो कोई सरकार कर सकती है और न ही कोई गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्था या संगठन। इन समस्याओं के समाधान के लिएसमाज के हर वर्ग से प्रत्येक व्यक्ति को ही आगे आना होगा।

॰ अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं स्वरूप :

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

पर्यावरण अति व्यापक संप्रत्यय है परन्तु पर्यावरण घटकों कीजानकारी मनुष्य को आदिकाल से है। पर्यावरण के अन्तर्गत वे सभी स्थितियाँ, परिस्थितियाँ, दशायें व प्रभाव जो कि जैव तथा जैविकीय समूह पर प्रभाव डाल रहे हैं सम्मिलित हैं। पृथ्वी पर जो मानव को चारों ओर से घेरे रहता है तथा उसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है, उसे ही **पर्यावरण** की संज्ञा दी जाती है। स्थल, जल तथा वायु भौतिक पर्यावरण के तत्व हैं जबकि जैविक पर्यावरण में पेड़–पौधे व छोटे–बड़े सभी जीवधारी आते हैं।

आज आधुनिकता के नाम पर पर्यावरण को सर्वाधिक आघात पहुँचाने वाली तथा भयंकर व चिन्ता में डालने वाली समस्या है–पर्यावरण प्रदूषण। इस समस्या से निपटने हेतु समाज के प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति जागरूक होना होगा तथा उसे प्रकृतिसे सामंजस्य को बनाये रखने हेतु निरन्तर कोशिशे करनी होगी। ऐसी ही एक कोशिश का नाम है– **''पर्यावरण शिक्षा''** क्योंकि शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है, जो व्यक्ति के व्यवहार और विचार बदल सकती है। इसी कारण आज के युग में पर्यावरणीय शिक्षा की अहम् भूमिका महसूस की जा रही है।

अध्ययन की आवश्यकता :

पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान अकेले न तो कोई सरकार कर सकती है और न ही कोई गैर सरकारी स्वयं–सेवी संगठन। इनके समाधान हेतु समाज के हर वर्ग से प्रत्येक व्यक्ति को ही आगे आना होगा। प्रस्तुत शोध ग्रामीण व शहरी वर्ग के व्यक्तियों के पर्यावरणीय ज्ञान व अभिवृत्ति को जानने का प्रयास है।इनदोनों वर्गों के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति उत्पन्न करने में ''पर्यावरण शिक्षा'' की भूमिका क्या रही है? इन्हीं विचारों ने शोधकर्ता को उक्त विषय में अध्ययन के लिए प्रेरित किया है तथा प्रस्तुत शोध अध्ययन में इन्हीं तथ्यों को जानने का प्रयास किया गया है।

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

अध्ययन के उद्देश्य :

1– पर्यावरण संरक्षण के प्रति पर्यावरणीय अभिवृत्ति उत्पन्न करने में पर्यावरण शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।

2– पर्यावरण संरक्षण के प्रति ग्रामीण वर्ग के व्यक्तियों (शिक्षित व अशिक्षित संयुक्त) की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3– पर्यावरण संरक्षण के प्रति ग्रामीण वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4– पर्यावरण संरक्षण के प्रति शहरी वर्ग के व्यक्तियों (शिक्षित व अशिक्षित संयुक्त) की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

5– पर्यावरण संरक्षण के प्रति शहरी वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें :

परिकल्पना के बिना अनुसंधान कार्य एक उद्देश्यहीन क्रिया है अतः प्रस्तुत शोध कार्य को सुव्यवस्थित रूप से सम्पादित करने हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है–

1. पर्यावरण संरक्षण के प्रति ग्रामीण वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. पर्यावरण संरक्षण केप्रति शहरी वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएं :

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद मण्डल में स्थित जनपद मुरादाबाद, बिजनौर, रामपुर व ज्योतिबाफुले नगर हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में 540 व्यक्ति ग्रामीण वर्ग तथा 4600 व्यक्ति शहरी वर्ग के सम्मिलित हैं।

3. न्यादर्श का विभाजन ग्रामीण/शहरी/शिक्षित/अशिक्षित के आधार पर किया गया है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन में **''पर्यावरणीय अभिवृत्ति''** उत्पन्न करने में पर्यावरण शिक्षा की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

प. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु 'पर्यावरण शिक्षा' पर प्रकाश डालने वाली विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध–प्रबन्धों, जनरल, अभिलेखों तथा पूर्व शोधों का अध्ययन किया गया है।

पप. शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया :

1. अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध–अध्ययन का वर्तमान से सम्बन्ध होने के कारण **''सर्वेक्षण विधि''** का प्रयोग किया गया है।

2. न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के मुरादाबाद मण्डल में स्थित चारों जनपदों के कुल 1000 व्यक्तियों का चयन **''अंश प्रतिदर्शन''** विधि द्वारा किया गया है।

3. चर :

प्रस्तुत शोध–अध्ययन में पर्यावरण शिक्षा स्वतन्त्र चर तथा पर्यावरणीय अभिवृत्ति आश्रित चर के रूप में प्रयोग की गयी है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

4. उपकरण :

शोधकर्ता द्वारा आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित **''साक्षात्कार अनुसूची''** (पर्यावरण अनुसूची) का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति से जल, वायु, ध्वनि, मृदा प्रदूषण, वृक्षों व वन क्षेत्र का महत्व, वन्य प्राणी, जनसंख्या, ऊर्जा संरक्षण आदिसे सम्बन्धित कुल 38 प्रश्न पूछे गये।

5. आंकड़ों का संकलन (संग्रहण)

शोधकर्ता द्वारा मुरादाबाद मण्डल के चारों जनपदों के ग्रामीण व शहरी वर्ग के व्यक्तियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके ''साक्षात्कार अनुसूची'' द्वारा आंकड़ों को एकत्र किया गया।

6. सांख्यिकीय तकनीकियाँ :

शोधकर्ता द्वारा परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, मानक त्रुटि, कान्तिक अनुपात/टी–टैस्ट आदि सांख्यिकीय तकनीकियाँ प्रयोग की गयी।

प्ट. आंकड़ों का विश्लेषण :

सही उत्तर देने पर '1' अंक तथा गलत उत्तर देने पर '0' अंक प्रदान किये गये हैं। इस प्रकार अधिकतम 38 अंक तथा न्यूनतम 0 (शून्य) मिलने की सम्भावना है। इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों के आधार पर उचित सांख्यिकीय तकनीकियों द्वारा उनका विश्लेषण किया गया।

परिकल्पना परीक्षण एवं निर्वचन :

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

परिकल्पनाओं के **परीक्षण** (अन्तर–सार्थक/निरर्थक) के पश्चात् उनका **निर्वचन** (परिकलपना–स्वीकृत/अस्वीकृत) किया गया है तथा सम्बन्धित सारणी प्रस्तुत की गयी हैं।

परिकल्पना संख्या–1 पर्यावरण संरक्षण के प्रति ग्रामीण वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–1

परिगणित प्रमाप	प्रमाप संकेत	प्रमाप मूल्य
प्रथम माध्य (शिक्षित ग्रामीण)	M_1	8.96
द्वितीय माध्य (अशिक्षित ग्रामीण)	M_2	8.68
माध्य अन्तर	M_1-M_2	(+) 0.28
प्रथम न्यादर्श इकाई संख्या	N_1	190
द्वितीय न्यादर्श इकाई संख्या	N_2	350
माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम	SED	0.06
क्रान्तिक अनुपात (परिकलित)	CR	4.67
5 प्रतिशत क्रान्तिक अनुपात (सारणी)	CR (5%)	1.96
अन्तर स्थिति	2.87>1.96	सार्थक
परिकल्पना निर्वचन	HO	अस्वीकृत

परिकल्पना संख्या–2 पर्यावरणय संरक्षण के प्रति शहरी वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या–2

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

परिगणित प्रमाप	प्रमाप संकेत	प्रमाप मूल्य
प्रथम माध्य (शिक्षित शहरी)	M_1	9.65
द्वितीय माध्य (अशिक्षित शहरी)	M_2	9.01
माध्य अन्तर	M_1-M_2	(+) 0.64
प्रथम न्यादर्श इकाई संख्या	N_1	310
द्वितीय न्यादर्श इकाई संख्या	N_2	150
माध्य अन्तर का प्रमाप विभ्रम	SED	0.19
क्रान्तिक अनुपात (परिकलित)	CR	3.37
5 प्रतिशत क्रान्तिक अनुपात (सारणी)	CR (5%)	1.96
अन्तर स्थिति	3.70>1.96	सार्थक
परिकल्पना निर्वचन	HO	अस्वीकृत

ट. निष्कर्ष :

परिकल्पना परीक्षण एवं निर्वचन के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैं–

1– मुरादाबाद मण्डल के ग्रामीण वर्ग के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों के पर्यावरणीय जागरूकता के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि दोनों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर अच्छा है। अतः कहा जा सकता है कि ''पर्यावरण शिक्षा' व्यक्तियों में पर्यावरणीय अभिवृत्ति उत्पन्न करने में योगदान देरही है।

2– परिकल्पना संख्या–1 से सम्बन्धित आंकड़ों (सारणी संख्या–1) का विश्लेषण व तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि **ग्रामीण वर्ग** के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर अशिक्षितों से अधिक है।

3– परिकल्पना संख्या–2 से सम्बन्धित आंकड़ों (सारणी संख्या–2) का विश्लेषण व तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि **शहरी वर्ग** के शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षित व्यक्तियों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति का स्तर अशिक्षितों से अधिक है।

सुझाव :

1– पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित कार्यक्रम संचार माध्यमों (टी0वी0, रेडियों, चलचित्र आदि) द्वारा समय–समय पर प्रसारित किये जाने चाहिये।

2– पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित संगोष्ठी,सेमीनार व कार्यशालाओं का आयोजन शहरों के साथ–साथ ग्रामीण स्तरों पर भी किया जाना चाहिए।

3– ग्रामीण व शहरी वर्ग के सभी विद्यालयों में **''पर्यावरण शिक्षा क्लब''** की स्थापना की जाए तथा उसे निरन्तर क्रियाशील रखा जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– गोयल,एम0के0 : ''पर्यावरण शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (2009)

2– कौल,लौकेश : ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'', विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, नई दिल्ली (2008)

3– शुक्ला, सी0एस0 : ''पर्यावरण शिक्षा'', आलोक प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ (2008)

4– वर्मा, रामकुमार : ''पर्यावरण शिक्षा एवं जनभागीदारी'', भारतीय आधुनिक शिक्षा' नई दिल्ली,एन0सी0ई0आर0टी0 जुलाई–अक्टूबर (संयुक्तांक) 2007

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

5– विश्वकर्मा, वी0पी0 : ''पर्यावरण शिक्षा प्रमुख समस्याएं एवं समाधान'' नई दिल्ली एनसी0ई0आर0टी0 अप्रैल 2006